आपातकाल में सृजन फुलवारी

रवि रश्मि 'अनुभूति'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

रवि रश्मि 'अनुभूति'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-106-0
संपादक- **डॉ.** प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र-संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय-15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण-2020, रवि रश्मि 'अनुभूति'
मूल्य-50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY RAVI RASHMI 'ANUBHUTI'
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	हे मैया अम्बे	6
2.	जागो तो सही	7
3.	ख़तरे में अतुकांत	8
4.	चलते-चलते	9
5.	मोहन मधुर बजाए बंशी	10
6.	अब तुम ही हो इस जीवन में	11
7.	याद हमें भी कर लेना	12
8.	नव परिवर्तन आएगा	13
9.	पूनम की रात	14
10.	प्रार्थना	15
11.	वंदन	16
12.	सुन यही बतियाँ	17
13.	इक़रार	18
14.	बेवजह	19
15.	माँ	20
16.	ज़रा से प्यार में	21

हे मैया अम्बे

हे जग जननी मैया अम्बे, ज्ञान का दीप जलाओ,
आशीष अभी दे जाओ तुम, घर मेरे तो आ जाओ,
नाचें-झूमें सारे मिलकर, ढोल-मंजीरे बज रहे,
रास रचायें मिलकर सारे, बीच सभी के अब आओ,

मंगलमयी, ममतामयी माँ, जग तारण वाली हो तुम।
पापियों का करती संहार, शेरांवाली माता तुम।।
पलकें बिछाये हम खड़े हैं, राह निहारें आ जाओ,
आशीष अभी दे जाओ तुम, घर मेरे तो आ जाओ,

प्यारा-सा सिंहासन सजाया, लाल ध्वज द्वार फहराया।
तेरा पूजन हमको भाया, रूप सजीला है भाया,
दर्शन देने अब आ जाओ, मैया अम्बे आ जाओ,
आशीष अभी दे जाओ तुम, घर मेरे तो आ जाओ,

काटो बेड़ियाँ माँ दुखों की, पीड़ा का अब नाश करो।
मेरे मन-आँगन में मैया, भक्ति का ही उजास भरो।।
भोग बनाया मैया हमने, आके अब तो खा जाओ,.
प्यासे हैं दर्शन के मैया, आतुर हैं तुम आ जाओ,

हे जग जननी मैया अम्बे, ज्ञान का दीप जलाओ,
आशीष अभी दे जाओ तुम, घर मेरे तो आ जाओ,

जागो तो सही

रोक लो तुम आज, देखो रोग को।
भूल जाओ आज सारे भोग को।।
फैलती जाती महामारी सुनो।
रूह काँपे देख, सोचो तो गुनो।।

मौन पूरी राह कहती जा रही।
रात देखो आज, क़हर ढा रही।।
गुनगुनाते रोज़, भौंरे गा रहे।
लो सुनो ये साज, बजते जा रहे।

दीप रोशन बात, बाती कह रही।
जान मुट्ठी आज, दुनिया जी रही।।
लो खड़े हैं दूत, लेने जान ही।
सच यही है देख, ये लो मान ही।।

रोक लो खुद आप, अपने को यहीं।
है कहीं जाना तुम्हें बाहर नहीं।।
आपदा है खूब, बढ़ती जा रही।
सामना का काम, हिम्मत कर रही।।

कर्फ़्यू की बात, मानो तो सभी।
ज़िंदगी जो आज, फिर मिलती नहीं।।
त्याग आलस नींद, जागो तो सही।
हाथ धोओ रोज़, रगड़ो ये कही।।

ख़तरे में अतुकांत

कोरोना का तूफ़ान, त्रस्त है जहान
मान न मान, मेरा देश महान
चले सिपाही सबको रोकने,
बाहर निकले न कोई नादान।

तूफ़ान आँधी वाला नहीं
सत्याग्रह गांधी वाला नहीं
रक्षक देश के रक्षा करते,
कर्फ़्यू पर ताले वाला नहीं।

डाकू, लुटेरे पीछे पड़ा है
कोरोना हाथ धोकर खड़ा है
बाहर कोई भी निकले न,
देश कोरोना भगाने अड़ा है।

सफ़ाई की देते हैं दुहाई
महामारी विदेश से आई
हाथ न लगाओ चीज़ परायी,
समझो उसने मुँह की खायी।

डॉक्टर चिकित्सक नहीं डरते
जी-जान से सेवा करते
यमदूत भी खड़ा सामने,
गला पकड़ उसे हैं धरते।

जनता की जान ख़तरे में है
देश की आबरू नहीं ख़तरे में है।
जितना हो सैनिक, डॉक्टर बचाते,
बच कर रहो, स्वास्थ्य ख़तरे में है।

चलते-चलते

चलते चलते हम भी कहते,
चढ़ना तुम शैल सदा सुनो तो।
खुशबू महकी चहकीं चिड़ियाँ,
खिलतीं कलियाँ अब लो गुनो तो।।

महका- महका अँगना सुन तो,
करता अब याद वही बसेरा।
खिलता रहता गुड़िया बन के,
रहता जिसका अब दूर डेरा।।

गुड़िया चुपके कहती रहती,
मिलना जब याद सता रही हो।
तुम खो रहना वह याद लिए,
जब रात सदा लय गा रही हो।।

हम भी सहते अब ये कहते,
जब सून पड़ी वह रात काली।
करते अब याद कथा वह तो,
वह याद मिठास बनी सवाली।।

मोहन मधुर बजाए बंशी

धुन कोई भी गाये बंशी, मैं भी संग सदा गाऊँ।
मोहन मधुर बजाए बंशी, प्रेम मगन हो इतराऊँ।।

लहरें मन में उठें तरंगित, झूम झूम लो उतरातीं।
मचल मचल कर अब देखो तो, अपना ही हाल सुनातीं।
मैं भी लहरा कर सुन लो अब, डगमग बोली मैं जाऊँ।।
मोहन मधुर बजाये बंशी, प्रेम मगन हो इतराऊँ।।

मन में मोहन बसते सुन लो, सदा रहें बातें यूँ ही।
धड़कन में बसते हैं मोहन, गाते रहते बस यूँ ही।
रूठें नहीं कभी भी गिरिधर, रूठें तो अभी मनाऊँ।।
मोहन मधुर बजाये बंसी, प्रेम मगन हो इतराऊँ।

प्रेम पंथ ही जानूँ मैं तो, और न जानूँ अब राहें।
मैं उबरूँ तब ही तो सुन लो, मोहना थाम लो बाँहें।।
अधरों से मुरली अभी लगा, धुन मधुर सुन मै बजाऊँ।
भक्ति भावना भर दो अब तो, भव सागर मैं तर जाऊँ।।

मोहन मधुर बजाए बंशी,
प्रेम मगन हो जाऊँ।।

अब तुम ही हो इस जीवन में

पथ अब तक जो मिला नहीं तो, भटका मैं अब लगता हूँ।
अब तुम ही हो इस जीवन में, भरा हुआ सा लगता हूँ।

रहे सामने हर पल मेरे,
जो तू मैं तो तकता हूँ।
पूछा तूने क्या कर सकते,
सुन, मैं सब कर सकता हूँ।
अब तुम ही हो इस जीवन में, भरा हुआ सा लगता हूँ।

नहीं चैन है रातों को तो,
तुझे देख मैं जगता हूँ।
तू आयेगी सोऊँ कैसे,
भ्रमित जाल में फँसता हूँ।
अब तुम ही हो इस जीवन में, भरा हुआ सा लगता हूँ।

जिस दिन होता दर्शन तेरा,
मैं सुख से तब रहता हूँ।
भर जाता है तब मेरा मन
हौले-हौले हँसता हूँ।
अब तुम ही हो इस जीवन में, भरा हुआ सा लगता हूँ।

शबनम-सी तू शीतल ही है,
मैं खूब ही परखता हूँ।
तू आये या न आये अभी,
दिल विशाल ही रखता है।
अब तुम ही हो इस जीवन में, भरा हुआ सा लगता हूँ।

याद हमें भी कर लेना

कर्मठता की बात करो जो, कर्म भी वैसा कर लेना।
करने पूरा कर्तव्य सुनो, शक्ति स्वयं तन भर लेना
परम लक्ष्य संधान करो तो,
याद हमें भी कर लेना।

चलते रहना मत डरना तुम, राहों में कष्ट मिलेंगे।
काँटों भरी राह में सुन लो, दुष्ट अब हज़ार मिलेंगे।।
हिम्मत से तभी लेना काम, आहें तुम मत भर लेना।
परम लक्ष्य संधान करो तो,
याद हमें भी कर लेना।।

अँधकार की चीर के छाती, तम को तुम दूर भगाओ।
गीत विजय के गा-गाकर, खुशियाँ मिल सभी मनाओ।।
हार जीत की बात करो तो, मात हार को दे देना।
परम लक्ष्य संधान करो तो,
याद हमें भी कर लेना।।

पतझड़ के मौसम में भी तुम, होना नहीं कभी निराश।
कलियों सम ही मुस्काना तुम, छोड़ो नहीं कभी आस।।
खुशियाँ देकर तुम सबको ही, पीर सभी की हर देना।
परम लक्ष्य संधान करो तो,
याद हमें भी कर लेना।।

नव परिवर्तन आएगा

अनुशासन के पालन से ही, नव परिवर्तन आएगा।
सद्भाव का भाव ही देखो, कोरोना दल जाएगा।।

कठिनाइयों के दौर से ही, गुज़र रहा है जग सारा।
एक-एक कर छूट रहा है, तोड़ परिवारिक दायरा।।
करो सहयोग आपस में ही, समय नहीं फिर आएगा।

लंबे समय की दौड़ में तो, समय काटना मुश्किल है।
बाहर निकलो मौत खड़ी है, कोरोना तो क़ातिल है।।
अनुशासन से तो सुन प्यारे, मुँह की ही यह खाएगा।।

नियम से टले न सूरज कभी, चाँद,' तारे औ' पशु-पक्षी।
दुम दबा कर भागेगा अभी, यही कोरोना नर-भक्षी।।
रहना घर में देशवासियो, यह खुशहाली लाएगा।।

माँ दुर्गा का कर आराधन, आह्वान मात का करो।
आशीषें माँ देगी सबको, सच्चे मन से आस धरो।।
नव सूरज की करें अर्चना, जो नव उजास लाएगा।।

त्राहि-त्राहि से धैर्य पालन, काम सभी के आएगा।
अनुशासन के पालन से ही, नव परिवर्तन आएगा।।

पूनम की रात

पूनम की रात खिली प्यारी, दूधिया चाँद प्यारा-प्यारा,
धरती पर शीतल चंदनिया, चंदा फैलाये अब न्यारा,

दूधिया रूप चाँद सलोना, है बच्चों का एक खिलौना।
जादू है सभी पर चलाए, दिखे यह कभी छौना-छौना।
कितना प्यारा चाँद दुलारा, सबकी ही आँखों का तारा,
पूनम की रात खिली प्यारी, दूधिया चाँद प्यारा-प्यारा,

आज करें हम पूजा तेरी, विनती सुन लेना अब सारी।
तुम करो पूरी हर कामना, चमको अब तो रजनी सारी।
सुनो पैग़ाम यही हमारा, सुन ले जग भी तो सारा,
पूनम की रात खिली प्यारी, दूधिया चाँद प्यारा-प्यारा,

भोले तुम पूनम के चंदा, चमको रात पूरी जागते।
लुभाते हो चाँदनी को तुम, तुझसे तम दूर हैं भागते।।
कर देते हो तुम उजियारा, प्यारा लगता है जग सारा,
पूनम की रात खिली प्यारी, दूधिया चाँद प्यारा-प्यारा,

खेलोगे तुम आँखमिचौली, बन जाएँगे सब हमजोली।
खूब चलेगी हँसी-ठिठोली, भर देना तुम अब हर झोली।
ग़म तो लो अब हमसे हारा, खुशियाँ सब हैं बनी सहारा,
पूनम की रात खिली प्यारी, दूधिया चाँद प्यारा-प्यारा,

चमकता चाँद तो सब माने, चँदनिया भी हर बात जाने।
सबसे करे सुखद सदा बात, लगी पूनम की रात गाने।।
कानों में रस घोले प्यारा, झंकृत है हर रोम हमारा,
पूनम की रात खिली प्यारी, दूधिया चाँद प्यारा-प्यारा,

प्रार्थना

खड़े हैं द्वार पर तेरे, हमें आशीष दे देना,
दया करना हमारे प्यार को, स्वीकार कर लेना।

हमें भी ज्ञान दे जाओ, प्रभु दिलों में बस अभी जाओ।
अँधेरे की हटा चादर, जला अब दीप भी देना।।
खड़े हैं द्वार पर तेरे, हमें आशीष दे देना।
दया करना हमारे, प्यार को स्वीकार कर लेना।।

बहा दो प्रेम का सागर, ज्ञान की भर सदा गागर।
जलाकर जोत समता से, हमें रहना सिखा देना।।

करें हम प्यार से सेवा, मिले न चाहे हमें मेवा।
सदा ईमान से रहना, हमें तो तुम बता देना।
खड़े हैं द्वार पर तेरे, हमें आशीष दे देना
दया करना हमारे प्यार को स्वीकार कर लेना।

वतन की कर सदा सेवा, जियें हम देश की ख़ातिर
सदा ही भक्ति की ही शक्ति का वरदान दे देना।।
खड़े हैं द्वार पर तेरे, हमें आशीष दे देना,
दया करना हमारे प्यार को, स्वीकार कर लेना।

वंदन

भारत का करते हम वंदन।
भारत माथ सजे अब चंदन।।

श्याम कहें तुम नाम जपो अब।
जाप करो तुम नाम तपो अब।।

आज कहें हम नाथ सुनो तुम।
आज गिरें न हाथ गहो तुम।।

दास कहे दुख भंजन हे प्रभु।
लो विनती करते पूजते प्रभु।।

प्यार भरा अब गीत सुनें हम।
नाथ हरो सब कष्ट गुनें हम।।

गा सकते हम साज बजे अब।
ध्यान बँटे दुख आज तजें हम।।

हार गये जग में अब तो हम।
छूटत धीरज जात सुनो प्रभु।।

नाथ भरो अब तो यह गागर।
पार करा अब दे भव सागर।।

सुन यही बतियाँ

पुलकित राधिका लख सदा प्रभु को।
धर कर नाम आज चल दी ब्रज को।।
हर मन मोहना हर घड़ी सुन तो।
हर पल मान दूँ गुण अभी गुन लो।

बस मन राम पीर सह लो अब तो।
दरशन को खड़े अब हस्त गह लो।।
बहुत लगी अभी लगन तो प्रभु जी।
सुन अब राह मैं निरखती प्रभु जी।।

नयन उदास आज कहते सजना।
पग पड़ते अभी दरस दो अपना।।
गिरिधर मैं कहूँ सुन यही बतियाँ।
तुझ बिन तो नहीं न करतीं रतियाँ।।

इक़रार

मनाने चलें अब उसी यार को हम,
दिलों में बसा के उसी प्यार को हम,

ये तन्हाइयाँ जो गुज़ारीं हैं हमने,
बसा लें चलो आज संसार को हम,

मिला क्या है तक़रार से हम करें क्यों,
करें आज स्वीकार भी हार को हम,

कहाँ हैं कहाँ हैं ख़ज़ाने सभी वो,
अभी माँगते हैं उसी प्यार को हम,

बढ़े प्यार की राह पर हम तभी से,
तरसते थे करने आँखें चार को हम,

तराने हमारे यहाँ भी तो गूँजें,
सुनें एक दूजे की झनकार को हम,

शुक्रिया तुम्हारा मिले राह पर तो,
तभी पा सके आज इक़रार को हम,

बेवजह

कर दिया दिल हवाले अभी बेवजह,
हो गये हम तो रुसवा अभी बेवजह,

आँख भर कर तुझे देखती है रूठी,
क्यों दिल्लगी की हमने अभी बेवजह,

प्रीत खोई चलो कोई बात नहीं,
तड़पते हैं सुनो तो अभी बेवजह,

दिन गुज़ारा सदा ही जुदाई सही,
दुश्मनी कर रहे हो अभी बेवजह,

आज तो कह रहे हैं फ़साना तुम्हें,
तुम छुपाओ न बातें अभी बेवजह,

प्रीत की रीत जो निभ सके तो सही,
रूठ कर जा न पाओ अभी बेवजह,

बन सकोगे कहो बेवफ़ा बोल दो,
तीर क्यों है चलाना अभी बेवजह,

माँ

सही-सही माँ राह दिखाती,
पूजी जाती माँ।
माँ का हर पल सम्मान करो,
देखे हर पल माँ।।

माँ का देवी का दर्जा है,
करते हम पूजा।

माँ की ममता है वट वृक्ष-सी,
माँ ही सरमाया।।
सारे संकट माँ हरती है,
माँ शीतल छाया।।

निस्वार्थ भाव सेवा करती,
माँ बड़ी पुजारी।
सब दुख हरने वाली माँ है,
माँ बड़ा दुलारी।।

संबल बन बच्चों का वह तो,
संस्कार सिखाती।
निराशा से गिरते देख माँ,
उम्मीद बन जाती।।

ज़रा से प्यार में

ज़िंदगी गुज़रे ज़रा-से प्यार में,
क्या रखा है जीत में सुन हार में,

रोकते काँटे हमारे प्यार को,
काट सकते ज़िंदगी हम ख़ार में,

गुनगुनाते हैं सदा हम गीत ही,
चल पड़ें हम गीत की गुंजार में,

मिल सके जो साथ तेरा सुन ज़रा,
क्या रखा है फिर किसी श्रृंगार में,

जीत तेरी हो कि मेरी सुन सजन,
खुशनुमा हो हम जियें संसार में,

रंग भर लो प्यार के दिल में सभी,
भर सकें खुशियाँ सभी त्योहार में,

प्यार से मिलजुल रहें देखो सदा,
क्या रखा है व्यर्थ की तक़रार में,

डगमगाती कश्तियाँ डरना नहीं,
बस भरोसा तुम रखो पतवार में,

नफ़रतों की छोड़ कर दुनिया ज़रा,
ढूँढ़ लो जादू ज़रा-सा प्यार में!

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

अंतरा शब्दशक्ति अपने आप में एक प्रकार से एक अनूठी संस्था है, जिसने साहित्य के क्षेत्र में ऐसा कदम उठाया है, जो वर्तमान में महामारी के समय में आपातकालीन लॉकडाउन अर्थात् घरों में बंद रहने वाले साहित्यकारों के लिए मानसिक स्तर पर काफी सहायक हो रहा है, क्योंकि मानसिक स्तर पर घरों में बंद होकर लोग सहज व शांत महसूस नहीं कर रहे हैं। न तो अखबार ही है पढ़ने केलिए और टेलीविजन है तो, पर उस पर नॉर्मल समाचार न होकर महामारी, खौफ व मृत्यु के समाचारों की भरमार है। इसलिए व्हाट्सऐप्स, फेसबुक, वेबसाइट्स आदि पर साहित्यिक गतिविधियों की धूम मची हुई है, जो मनुष्य को मानसिक रूप से स्वस्थ रख रही हैं व मानसिक रूप से भावनाओं व संवेदनाओं के संसार को आपसी विचारों के आदान-प्रदान से तरोताजा रख रही हैं। वास्तव में आपातकाल में सृजन निराशा से दूर रखता है।

यह सच भी है कि खाली दिमाग शैतान का घर होता है, अतः यह भी उतना ही सच है कि आपातकालीन समय में सृजन कार्य में रत रहने से व्यर्थ की बातों में ध्यान नहीं लगता व सृजन हमें पूर्णतया निराशा से दूर रखता है। व्हाट्सऐप्स ग्रुप्स पर भी लोगों को तनाव से दूर रखने व सक्रिय रखने के लिए कई कवि सम्मेलन-मुशायरे किये जा रहे हैं, जिसमें मैं भी बहुत ही सक्रिय रह रही हूँ, जिससे हमनवा से दूर हैं।

मैं अंतरा शब्दशक्ति संस्था की अध्यक्षता कर रही प्रीति सुराना जी का आभार प्रकट करती हूँ कि उन्होंने सृजन की ओर साहित्यकारों को प्रवृत्त कर, उन्हें निराशाओं व कुंठाओं से दूर रखने में बहुत बड़ी जिम्मेदारी निभायी है। संस्था का पुनश्चः आभार।

रचनाकार

रवि रश्मि 'अनुभूति'

Mobile - 9004422493

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331

संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-106-0

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/